P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भीलवाड़ा जिले में औद्योगिक विकास का भौगोलिक परिदृष्य

जगदीश प्रसाद मौर्य
व्याख्याता,
भूगोल विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान

सारांश

प्राचीन ''भिलाड़ी'' नाम से विकसित भीलवाड़ा जो वर्तमान में ''वस्त्र नगरी'' के नाम से विख्यात है। शकों, हुणों पिण्डारियो और मराठों के आक्रमणो से कई बार उजड़ा व बसा है। भीलवाडा मेवाड़ राज्य की बनेड़ा व बदनोर रियासतों तथा शाहपुरा ठिकाने व माण्डलगढ़, पुर, सांगानेर, हमीरगढ़ मुगलकालीन आक्रमणों के दौरान मेवाड़ राज्य रक्षा चौकियों के रूप में होता था, भीलवाडा गुहिल व चौहान राजपूतो के राज्य का भी हिस्सा रहा था। यही कारण है कि इसका अलग अस्तित्व नही होने के कारण इसमें उद्योगो का विकास प्राचीन काल में नही हो पाया।

मुख्य शब्द : पिण्डारियो, भिलाडी, परम्परागत, हेण्डीक्राफ्ट, टैक्सटाइल।

प्रस्तावना

वर्तमान में भीलवाड़ा जिले में लघु, कुटीर व वृहद्ध उद्योगो की पंजीकृत संख्या लगभग 18 हजार है। और भविष्य में नवीन तकनीकी, विदेशी पूँजी व राज्यो, विष्व स्तर पर बाजार की उपलब्धता, राज्य सरकार से आर्थिक सहयोग, तीव्र जनसंख्या वृद्धि, कम होती सरकारी नौकरियां व अन्य कई कारणो से भीलवाड़ा में नये उद्योगो की स्थापना बढती ही जा रही है।

अध्ययन क्षेत्र

भीलवाड़ा जिला राजस्थान के मध्य दक्षिणी पूर्वी भाग में $25^{o}0'$ एवं 27^{o} $50'$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^{o}30'$ एवं $75^{o}25'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 10455 वर्ग कि.मी. है। जिले का भौगोलिक धरातल समतल एवं आकार पतंगाकार है, यह जिला समुद्रतल से 264.32 मीटर ऊँचा है। जिले में 8 उपखण्ड़ 12 तहसीले 11 पंचायत समितियाँ, 6 नगरपालिकाएं, 383 ग्राम पंचायते, 2 उपतहसील 1 नगर परिषद एवं 1796 कुल राजस्व ग्राम है। जिले की कुल जनसंख्या (2011 के अनुसार) 24.10 लाख व्यक्ति है। जिले की जलवायु अर्द्ध शुष्क व स्वास्थ्यप्रद है सामान्य तापमान 3^{0}c. न्यूनतम व अधिकतम 47-5^{0}c. रहता है जिले की प्रमुख नदियां बनास, बड़ेच, कोठारी, मानसी, खारी, मेज, ऑवली एवं चन्द्रभागा प्रमुख हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

FIG NO. 1.1

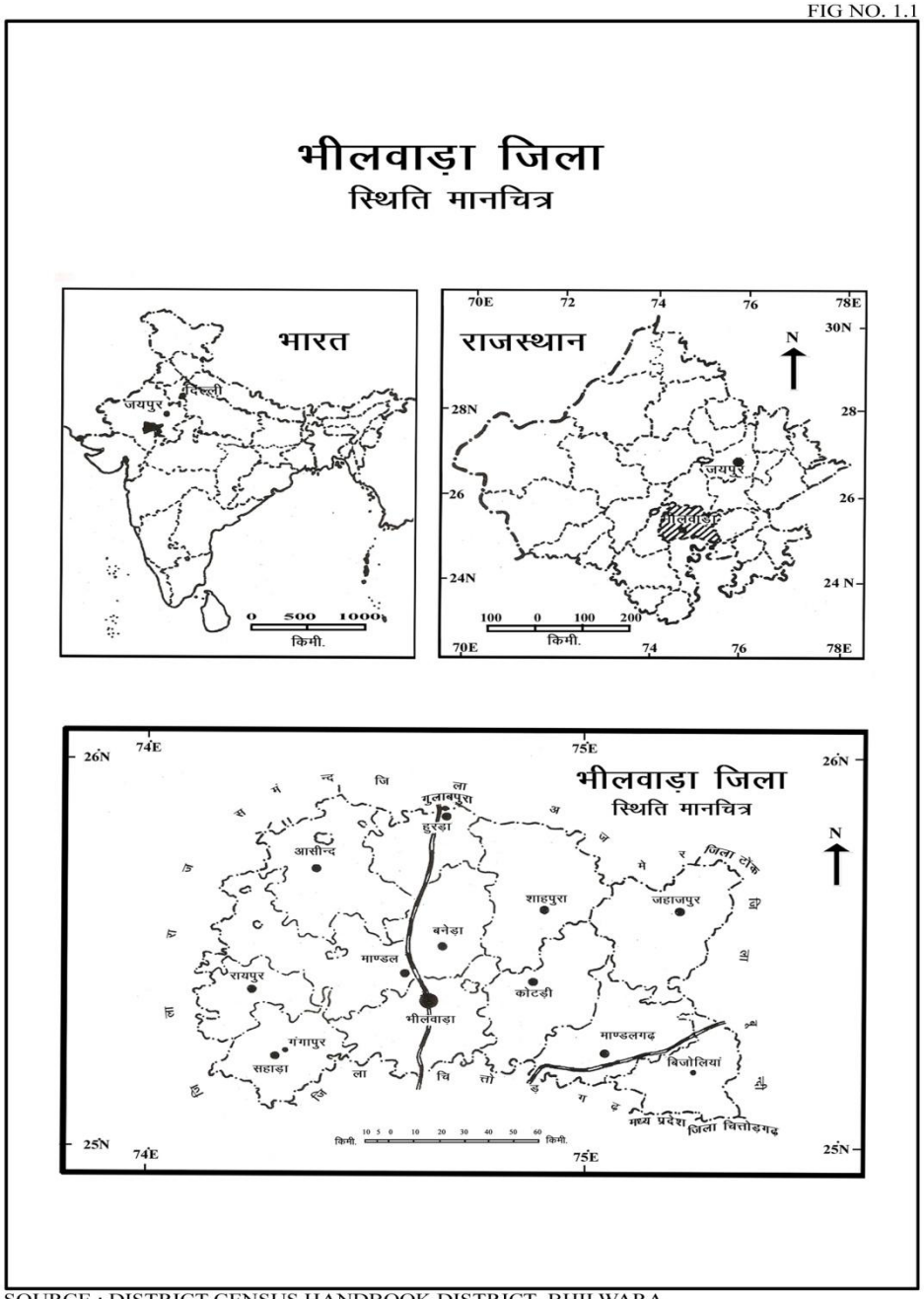

SOURCE : DISTRICT CENSUS HANDBOOK DISTRICT- BHILWARA

विधितन्त्र व आंकड़ो का एकत्रीकरण

जिले में औद्योगिक विकास के परिवर्तित स्वरूप के लिए प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग किया गया है इन विभिन्न आंकड़ो को सांख्यिकीय विधियों तथा अनुपात, मूल्य आदि से करने के बाद विभिन्न मानचित्रण व रेखा आरेखो से प्रदर्षित किये गये है।

औद्यौगिक विकास का ऐतिहासिक परिदृश्य

भीलवाड़ा जिले का औद्योगिक विकास राजाओं द्वारा इस क्षेत्र में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाने तथा स्वभावतः भी उद्योगों में रूचि न रखने से, जो कि सम्भवतः उनकी सामन्ती परम्पराओं के कारण था, औद्योगिकरण के विकास की गति बहुत धीमी थी। परिवहन एवं यातायात की सुविधायें पर्याप्त नहीं थी और राहदारी करों के कारण कई बाधाएं थी। प्रारम्भिक वर्षो में राज्य की और से आर्थिक विकास की गति को बढ़ावा देने के प्रयासों का भी अभाव रहा। बाहरी पूँजी स्थानीय विनियोग के लिये उपलब्ध नही थी फिर भी राजा अपनी रियासतों में विभिन्न हस्तकलाओं को संरक्षण व प्रोत्साहन देते थे। शाहपुरा की लाख के वार्निष वाली मेजे अपनी प्रसिद्धि के लिए उल्लेखनीय रही है। बनारस के खिलौनो की नकल में लकड़ी के उत्कृष्ट खिलौने भीलवाड़ा व शाहपुरा में बनाये जाते थे। भीलवाड़ा अपने टीन के बर्तनों की श्रेष्ठता और टिकाऊपन के लिय भी विषेष उल्लेखनीय था।

मेवाड़ दरवार ने सन् 1880 में भीलवाड़ा में एक कपास ओटने की फैक्ट्री की स्थापना की थी बड़े पैमाने

पर औद्योगिकरण को द्वितीय विष्वयुद्ध के दौरान पर्याप्त प्रेरणा मिली थी सन् 1938 में अजमेर के मैसर्स उम्मेदमल अभयमल के एक दूरदर्षी मुनीम के अथक प्रयासों के कारण, भीलवाड़ा में मेवाड़ टैक्सटाइल मिल्स की स्थापना हुई थी। दूसरी सूती कपड़े की मिल महादेव काटन मिल्स लि. की स्थापना 1941 में भीलवाड़ा में ही की गई थी किन्तु सन् 1949 में इसमे उत्पादन बंद कर दिया गया था।

सन् 1949 में राजस्थान बनने के बाद भीलवाड़ा शहर और उसके आस–पास के क्षेत्र शैनेः शैनेः राजस्थान के औद्योगिक मानचित्र पर उभरने लगे थे स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएं औद्योगिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुई।

विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में औद्योगिक विकास

प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान विजली की कमी के कारण बड़े पैमाने के उद्योगो की स्थापना पर अधिक ध्यान नही दिया जा सका था, किन्तु लघु उद्योगो, कुटीर उद्योगो व हस्तकलाओं के विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया गया था। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में 1960 में भीलवाड़ा नगर में एक औद्योगिक बस्ती बनाना आरम्भ किया था जो अब तक पूरी हो चुकी है। तृतीय पंचवर्षीय योजना काल में जिले में बड़े पैमाने के उद्योगो व माध्यम पैमाने के उद्योगो का विकास किया गया। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में जुलाई 1970 तक भीलवाड़ा जिले में पांच बडे उद्योग थे जिनमे से चार भीलवाड़ा नगर में ही स्थापित थे।

1. मैसर्स मेवाड़ टैक्सटाइल लि. भीलवाड़ा
2. मैसर्स राजस्थान स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स लि भीलवाड़ा (21 नव. 1962)
3. मैसर्स भोपाल माइनिंग वर्क्स लि. भीलवाड़ा– यह भारत में पहली फैक्ट्री है जिसने सन् 1958 में अभ्रक की इंसुलेषन ब्रिक्स बनाना शुरू किया था।
4. मैसर्स राज. वनस्पति प्रोडक्ट्स प्रा. लि. भीलवाड़ा–यह फैक्ट्री सन् 1967 में शुरू हुई थी और यह राजस्थान में इस प्रकार की प्रथम ही थी।
5. मैसर्स राजस्थान को आपरेटिव स्पिनिंग मिल्स लि. गुलाबपुरा।

उपरोक्त पांच बड़े उद्योगो को छोड़कर जिले में 110 लघु उद्योग थे। कुछ परम्परागत कुटीर उद्योग थे जो अधिकांषतः ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित थे चुंकि ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को वंषानुगत कौषल प्राप्त होता रहता था अतः ये उद्योग परम्परागत आधारो पर ही चलाये जाते है। प्रमुख कुटीर उद्योगो में लोहकर्म, मिट्टी के बर्तन बनाना, कपड़े बुनना, चमड़ा पकाना व जूते बनाना, घाणी से तेल निकालना, चूड़ी बनाना आदि है। पंचम् पंचवर्षीय योजना में सबसे अधिक व्यय औद्योगिक एवं खनन विकास पर किया गया साथ ही इस योजना में कुछ नये उद्योगों की स्थापना की गई। छठी पंचवर्षीय योजना में 24 जून 1978 को नई औद्योगिक नीति की घोषणा की गई जिसमें उद्योगों की प्राथमिकता निर्धारित करना, क्षेत्रीय असन्तुलन को कम करना, सार्वजनिक उद्योगों की समीक्षा करना, 29 प्रतिशत से कम उत्पादन क्षमता वाली औद्योगिक इकाइयों को बीमार घोषित कर उनके विकास के लिए प्रयास करना, सहायक उद्योगों को बढ़ावा देना, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना, सर्वेक्षण एवं प्रशिक्षण को बढ़ावा देना आदि कार्य किये। सातवीं पंचवर्षीय योजना में खेती के यन्त्रों, सूत कातने, सीमेन्ट, उर्वरक आदि के कारखानों को खोलने का प्रावधान किया गया। आठवी पंचवर्षीय योजना 1992–97 में दस्तकारी, हथकरघा साथ ही खनिज आधारित और कृषिगत माल आधारित उद्योगों के विकास को भी विशेष महत्व दिया गया। नवीं पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक विकास के साथ–साथ 'रोजगार–संवर्धन' पर जोर दिया गया। साथ ही हस्तशिल्प एवं लघु उद्योग का विकास करना, इस योजना में राजस्थान लघु उद्योग निगम की तरफ से भीलवाड़ा में एक इन्लेण्ड कन्टेनर डिपो और हस्तशिल्प व पर्यटन कॉम्पलेक्स स्थापित किया गया। दसवीं पंचवर्षीय योजना में सामाजिक व सामुदायिक सेवाओं एवं ऊर्जा के साथ कृषि आधार एवं लघु उद्योग जैसे हेण्डीक्राफ्ट तथा हैण्डलूम आदि को प्राथमिकता देना था। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में राज्य में औद्योगिकरण के प्रयास के बावजूद उद्योग तथा खनिज क्षेत्र के लिए प्रावधान 10वीं योजना के मुकाबले कम किया गया है।

इसी योजना के अन्तर्गत ''राजस्थान के मैनचेस्टर'' के रूप में प्रसिद्ध भीलवाड़ा शहर में ''स्पेशल इकॉनोमिक जोन'' की स्थापना की गई जिसमें ''टैक्सटाइल अपैरल पार्क'' बनाया गया इस हेतु भीलवाड़ा जिले के तीन गाँवों को जिसमें मलाण, जोधड़ास एवं भदालीखेडा को चुना गया।

अध्ययन क्षेत्र के रूपाहेली ग्राम में 2223 करोड रूपये लागत की महत्वाकांक्षी योजना चम्बल–भीलवाडा पेयजल परियोजना एवं 800 करोड रूपये लागत की मेन लाईन इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (मेमू) कोच फेक्ट्री का शिलान्यास दिनांक 22 सित. 2013 को किया गया जिससे तीन हजार लोगो को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा।

वर्तमान परिपेक्ष्य में औद्योगिक स्थिति

मानव एक सामाजिक प्राणी है और यह समाज मे रहता है इस कारण वह अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक विकास हेतु मानव ने अपने प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत आदि काल से आर्थिक अभ्युनति के लिए आर्थिक कार्य में लगा हुआ है इसविकास ने आधुनिक समय में औधोगिक रूप ले लिया है।

अध्ययन क्षेत्र वर्तमान में औद्योगिक विकास की दृष्टि से विषेषकर सिंथेटिक वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में न केवल राज्य में, अपितु देश–विदेश में अपना स्थान रखता हैं। भीलवाड़ा शहर इस कारण से ''टैक्सटाइल सिटी'' व ''राजस्थान का मैनचेस्टर'' कहलाता है।

भीलवाड़ा जिले में तहसीलानुसार लघु व कुटीर उद्योगों की संख्या व प्रतिषत सन् 2008–09

तहसील का नाम	कृषि पर आधारित उद्योग	:	वनों पर आधारित उद्योग	:	पशु सम्पदा पर आधारित उधोग	:	खनिज पर आधारित उधोग	:	विविध प्रकार के उधोग	:	कुल	:
आसीन्द	236	6.88	112	5.37	222	6.70	129	6.19	263	5.46	962	6.11
हुरड़ा	323	9.41	264	12.67	322	9.71	272	13.06	628	13.03	1809	11.50
शाहपुरा	276	8.04	113	5.42	265	7.99	168	8.07	247	5.12	1069	6.79
जहाजपुर	248	7.23	139	6.67	234	7.06	135	6.48	226	4.69	982	6.24
बनेड़ा	193	5.63	138	6.62	187	5.64	134	6.43	217	4.50	869	5.52
मा.डल	243	7.08	121	5.81	237	7.15	128	6.14	214	4.44	943	5.99
रायपुर	187	5.45	125	6.00	178	5.37	134	6.43	208	4.31	832	5.29
सहाड़ा	344	10.03	279	13.39	334	10.08	288	13.83	648	13.44	1893	12.03
भीलवाड़ा	743	21.66	486	23.32	728	21.96	497	23.86	1536	31.86	3990	25.36
कोटड़ी	236	6.88	102	4.89	221	6.67	125	6.00	206	4.27	890	5.66
मा.डलगढ़	216	6.30	109	5.23	211	6.37	27	1.30	231	4.79	794	5.05
बिजोलियाँ	186	5.42	96	4.61	176	5.31	46	2.21	197	4.09	701	4.46
जिला भीलवाड़ा	3431	100.00	2084	100.00	3315	100.00	2083	100.00	4821	100.00	15734	100.00

स्त्रोतः– जिला उद्योग केन्द्र, भीलवाड़ा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

FIG NO. 7.2

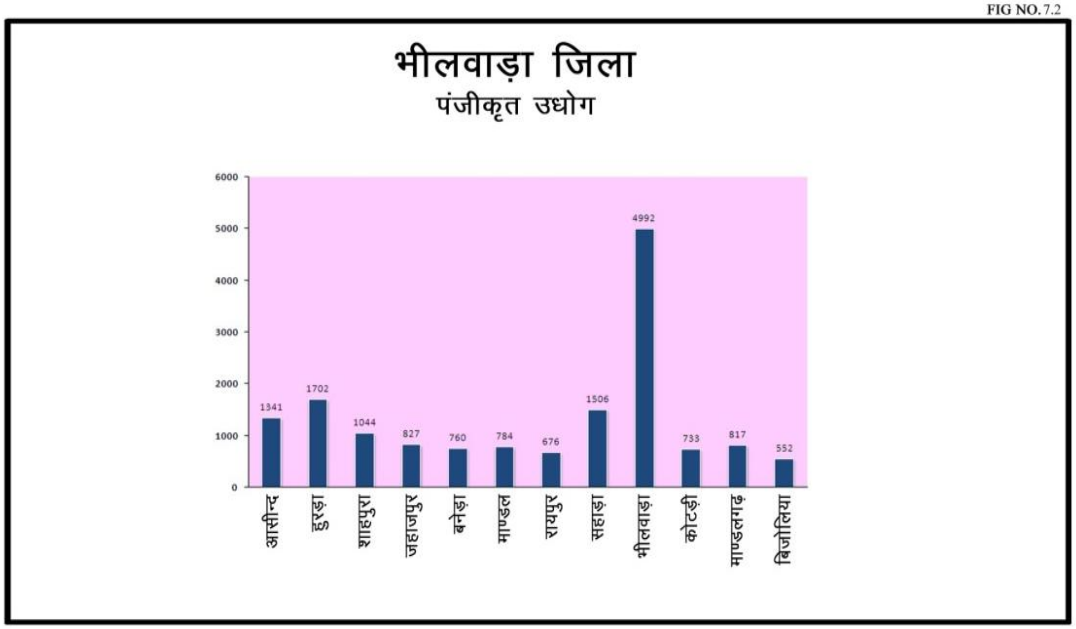

प्रस्तावित उद्योग

भीलवाड़ा जिले में भविष्य में खनिज आधारित उद्योगों की लगभग 22 इकाईयां, वन आधारित उद्योगो की 1244 इकाईयां तथा इंजिनियरिग व आपूर्ति उद्योगो की 39 इकाईयाां भीलवाड़ा, गुलाबपुरा, गंगापुर, शाहपुरा, आसीन्द, कोटड़ी, बीगोद, बनेड़ा, रायला, जहाजपुर में लगाना प्रस्तावित हैं।

औगोगिक विकास के कारण

जिले के औधोगिक विकास में इस क्षेत्र की अनुकूलतम परिस्थितियाँ बहुत महत्वपूर्ण रूप से सहायक सिद्व हुई है। जिसमें यहाँ की जलवायु , जल की उपलब्धता, खनिज संसाधन, शक्ति संसाधन, वन व पशु संसाधन ,पूँजी ,कच्चा माल व सस्ते श्रमिको की उपलब्धता के कारण औधोगिक विकास तीव्र गति से बढा है।

निष्कर्ष

प्राचीन समय में अलग से भीलवाड़ा राज्य नहीं हो पाने व राजाओं द्वारा औद्योगिक विकास पर ध्यान नहीं देने पर उद्योगो का विकास नहीं हो पाया था स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं व उनकी सुनिष्चित क्रियान्विति से उद्योगो का विकास अच्छी तरह से हुआ भविष्य में उद्योगो की योजनाये बनती रहेगी उनकी क्रियान्वित अच्छी तरह से होगी तो इस क्षेत्र का भविष्य काफी उज्ज्वल होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Govt. of Rajasthan*
2. *A report on morale irrigation project (1186) pp. 15-26.*
3. *A report on morale irrigation project (1186), pp. 29-35.*
4. *H.S. Tripathi,*
5. *Co-operative movement and the rural poor (Jaipur,1982), p. 17*
6. *ibid, pp. 27-29.*
7. *Nikasan, S.F.*
8. *Regional Development Planning in India, New Delhi, 1974. p 391*
9. *Mehta, B.L.*
10. *New Approach to Planning of Rural Water Supply. 1975.*
11. *Mathur, S.C.*
12. *Live Stock Development Vital for Animal Energy. Yojna Jan. 1-15, 1983.*
13. *Govt. of India*
14. *Towards self reliance. Approach paper to fifth Five Year Plan. New Delhi. 1972.*
15. *Govt. of Rajasthan*
16. *Industrial Potential Survey - Bhilwara (2008-09)*
17. *Gazetteer of Bhilwara District, Govt press, Jaipur*